REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

फोर्ट विलियम कॉलेज का हिंदी गद्य के विकास में योगदान

बृज किशोर वशिष्ट
एसोशिएट प्रोफेसर, मोतीलाल नेहरू कॉलेज (सांध्य) दिल्ली विश्वविद्यालय.

सारांश :

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना 1800 ई. में कलकत्ता में हुई। लॉर्ड वेलेजली ने इसकी स्थापना की। जॉन गिल्क्राइस्ट इस कॉलेज के हिंदी-उर्दू विभाग के प्रोफेसर होने के साथ-साथ इस कॉलेज के पहले अध्यक्ष भी थे। सदल मिश्र और लल्लूलाल हिंदी विभाग में अध्यापक थे और नासिकेतोपाख्यान (सदल मिश्र) और प्रेमसागर (लल्लूलाल) को हम खड़ी बोली हिंदी गद्य की आरंभिक रचनाएँ मान सकते हैं। इस में लेख फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, उसकी स्थापना के उद्देश्यों और हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के लिए किए गए योगदान पर संक्षिप्त रूप से विचार किया गया है।

मुख्य शब्द : फोर्ट विलियम कॉलेज, जॉन गिल्क्राइस्ट, सदल मिश्र, लल्लूलाल, हिंदी गद्य .

प्रस्तावना :

लॉर्ड वेलेजली 1798 ई. में गवर्नर जनरल बनकर भारत आए और लगभग आठ साल तक इस पद पर आसीन रहे। अपने शासन के आरंभिक दिनों में ही उन्होंने अनुभव किया कि ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों में अनुशासन और अनुभव की कमी है। उन्होंने यह भी महसूस किया कि उनमें शिक्षा योग्यता व उचित आचरण का भी अभाव है। इस संबंध में लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का कथन है, "ईसा की अठारहवीं शताब्दी के अंत में ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों को कुशल व्यापारी ही नहीं, वरन बढ़ती हुई ब्रिटिश सत्ता के अनुरूप उन्हें भारतीय भाषाओं का आचार-विचारों से परिचित कुशल नीतिज्ञ शासक बनाने की एक महत्त्वपूर्ण समस्या थी। इस समस्या के हल हुए बिना साम्राज्य के हाथ से निकाल जाने की आशंका थी।"[1] दरअसल उस समय की परिस्थिति ये थी कि भारत आने वाले युवा अंग्रेज़ अधिकारियों को प्रशासनिक दायित्व दे दिया जाता था, जबकि वे भारत की राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थितियों व भाषा तथा व्यावहारिक ज्ञान से परिचित नहीं होते थे, उसे जानते समझते नहीं थे। अतः वेलेजली को लगा कि यदि शासन की नींव को मजबूत बनाना है तो यहाँ शिक्षा की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक है। 'फूट डालो और राज़ करो' की अंग्रेजों की नीति को भी लागू करने में उनकी शिक्षा नीति योगदान कर सकती थी। रामविलास शर्मा लिखते

हैं, "अपने शासन की नींव को सुदृढ़ बनाने के लिए अंग्रेजों ने हिंदू व मुस्लिम समुदाय में फूट डालकर शासन करने की नीति अपनाई। उनके रीति-रिवाज व भाषा के अलग होने का लाभ उठाया।"[2] इस संदर्भ में विचार करते हुए वे आगे लिखते है, "अंग्रेजों ने जिस तरह अलगाव का फायदा उठाया, वह यहाँ की धार्मिक शिक्षा व सामंती पिछड़ेपन की वजह से था। ..... अंग्रेजों ने इस भेद को और गहरा किया। गिलक्राइस्ट ने हिंदुओं व मुसलमानों की अलग भाषाओं के सिद्धान्त की रचना की। रिज़ले ने धर्म के आधार पर दो क़ौमें गढ़ीं और ग्रियर्सन ने भाषा और संस्कृति के क्षेत्र में फूट के उसूल को धार्मिक रूप दिया।"[3]

अपने शासन की नींव को मजबूती प्रदान करने के लिए युवा अंग्रेज़ अधिकारियों का यहाँ के समस्त परिवेश से परिचय जरूरी था और इसके लिए जरूरी था हिंदुस्तान की भाषाओं और रीति-रिवाजों को जानना। जैसा कि लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय लिखते हैं, "ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों की नैतिक दशा सुधारने और एक अनुशासनपूर्ण शिक्षा-प्रणाली द्वारा उनके देश विषयक ज्ञान की अभिवृद्धि कर उन्हें व्यापारियों के स्थान पर नीतिकुशल शासक बनाने का जो कार्य क्लाइव, हेस्टिंग्ज़ और कार्नवालिस न कर सके उसे मार्क्विस वेलेजली (1798-1805) ने किया।.....जिस साम्राज्य की नींव राबर्ट कलाइव ने डाली और वारेन हेस्टिंग्ज़ ने जिसे सुरक्षित बनाया, उस पर मार्क्विस वेलेजली ने ब्रिटिश साम्राज्य का भव्य प्रासाद खड़ा किया। उनके भारतवर्ष आने पर ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक संस्था मात्र थी उन्होंने उसे सर्वोपरि राजनीतिक सत्ता बनाकर छोड़ा।"[4] स्पष्ट है कि भारत के परिवेश से परिचित हुए बिना अंग्रेज़ ज्यादा दिन तक इस महादेश को गुलाम बनाए हुए नहीं रख सकते थे। वेलेजली इस तथ्य से भलीभाँति परिचित था इसलिए उसने कॉलेज की स्थापना का महत्त्वपूर्ण समझा। लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने इस पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "शासन सूत्र अपने हाथ में ग्रहण करते समय स्वयं वेलेजली ने देखा कि कर्मचारियों की शिक्षा, योग्यता, आचरण और अनुशासन की देखरेख का कोई प्रबंध नहीं है। कम अवस्था में ही वे इंग्लैंड से भेज दिए जाते थे। उनकी शिक्षा अपूर्ण रहती थी। भारत आने पर उन्हें ऐसे देश का शासन करने का भार सौंप दिया जाता था जिसके राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक, भाषा एवं आचार-विचार संबंधी विषयों से वे बिलकुल अनभिज्ञ रहते थे। फौजी विभाग के कर्मचारियों का सामरिक ज्ञान अधूरा रहता था और माल-विभाग के कर्मचारियों के लिए रुई की गाँठे गिनना, कपड़ा नापना या हिसाब लगाना प्रधान कर्तव्य समझा जाता था। उन्हें कंपनी के चतुर और कूटनीतिज्ञ शासक बनाने की चिंता किसी ने न की थी। अनुशासनहीन अल्पवयस्क युवकों का चरित्र भ्रष्ट होते कुछ देर भी नहीं लगती। अनुभवहीन और अर्धशिक्षित होने के कारण वे अपना और कंपनी का उत्तरदायित्व समझने में नितांत असमर्थ थे। इस प्रकार किसी नियंत्रण के अभाव में वे बहुत जल्दी कुव्यसनों के शिकार बन जाते थे।"[5]

इस शासकीय व्यवस्था को समझकर व बदलाव की जरूरत को महसूस करके वेलेजली ने अंग्रेज़ी शासन की नींव को मजबूत करने के उद्देश्य से फॉर विलियम कॉलेज की स्थापना की। भारतीय भाषाओं पर काम करने के लिए जॉन गिल्क्राइस्ट को प्रधानाध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया। जॉन गिल्क्राइस्ट ने हिंदी के विशेषरूप से खड़ीबोली गद्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उस समय शासन की भाषा फारसी थी। ईस्ट इंडिया कंपनी अपने सरकारी कामों के लिए फारसी भाषा का ही व्यवहार करती थी। इस संदर्भ में ए. आर. देसाई का कथन है, "भारत में अंग्रेजों की राजनीतिक-प्रशासनिक एवं आर्थिक आवश्यकताएँ थीं, मूलतः उन्हीं के कारण भारत में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत हुई।"[6] इस पर और अधिक प्रकाश डालते हुए वे आगे लिखते हैं कि "ब्रिटिश सरकार ने विजित भू-भाग के लिए व्यापक प्रशासन तंत्र की व्यवस्था की। इस वृहद राजनीतिक प्रशासनिक तंत्र के संचालन के लिए शिक्षित व्यक्तियों की बहुत बड़ी तादाद में जरूरत

थी। इतने सारे शिक्षित लोग सीधे ब्रिटेन से तो आ नहीं सकते थे। नए प्रशासन के लिए सुयोग्य व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए भारत में स्कूल और कॉलेज खोल्न आवश्यक हो गया। महत्त्वपूर्ण ओहदों पर अंग्रेजों की और अधीनस्त पर शिक्षित भारतीयों की बहाली हुई।"[7]

जॉन गिल्क्राइस्ट (1754-1841), पेशे से डॉक्टर थे और साथ ही साथ एक कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने भारत में आगमन के साथ ही यह महसूस किया कि फारसी इस देश की आम बोलचाल की भाषा नहीं है। दिल्ली दरबार का पतन होने से फारसी सामान्य जन-जीवन से लगभग गायब हो चुकी थी। गिल्क्राइस्ट समझते थे कि ऐसी स्थिति में स्थानीय भाषाओं को सीखना ही अधिक उपयोगी होगा। लॉर्ड वेलेजली तो गिल्क्राइस्ट के विचारों से पहले ही प्रभावित थे और उनकी भाषा संबंधी नीतियों को लागू करने के पक्षधर थे। वेलेजली के प्रयासों के परिणामस्वरूप 10 जुलाई, 1800 ई. को कॉलेज की स्थापना से संबंधित रेग्युलेशन पास कर दिया गया। गवर्नर जनरल के विशेष आदेश देने पर कॉलेज की स्थापना की तिथि मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टम के प्रथम विजयोत्सव के अनुसार 4 मई, 1800 रखी गई। प्रारम्भ में यह कॉलेज कलकत्ता स्थित 'राइटर्स बिल्डिंग' में ही चलता था। रेग्युलेशन के अनुसार, "क्रमिक सफल युद्धों तथा न्यायशील, कुशल एवं उदार नीतिपूर्ण शासन के परिणामस्वरूप, समस्त भारत इंग्लैंड के झंडे के नीचे आ चुका है तथा कंपनी बहादुर के शासनकाल में एक ऐसे बड़े शक्तिशाली साम्राजय की स्थापना हो चुकी है जिसका विशाल भूमि भाग अपनी विभिन्न प्रथाओं, रीति-रिवाजों, भाषाओं तथा धर्मों से परिपूर्ण है। इसलिए यह सामाजिक आवश्यकता है कि ऐसे पदों पर नियुक्त कर्मचारियों को अपना कार्य सुचारु रूप से करना आना चाहिए, वे यहाँ के साहित्य, विज्ञान, विभिन्न भाषाओं तथा रीति-रिवाजों से परिचित होने चाहिए, साथ ही उनको ग्रेट ब्रिटेन की शासन व्यवस्था तथा विधान से भी परिचित होना चाहिए क्योंकि वे (कर्मचारी) अल्प आयु में कंपनी की सेवा में आ जाते हैं जिसके कारण उन्हें इन सब आवश्यकताओं की शिक्षा नहीं मिल पाती।"[8] रेग्युलेशन के पंद्रहवें अध्याय में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण विषय सम्मिलित किया गया- छात्रों के लिए पाठ्यक्रम। इसमें पाठ्यक्रम पर विचार करते हुए लिखा गया कि, "अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदुस्तानी, तेलुगू, मराठी, तमिल, कन्नड, मुस्लिम नयायविधि, हिंदू न्यायविधि, नीतिशास्त्र, नागरिक विधान शास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय न्यायविधान तथा अँग्रेजी न्यायविधान का ज्ञान।"[9] इसमें कोई शक नहीं कि उपर्युक्त पाठ्यक्रम किसी भी संस्थान के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है लेकिन उस समय यह बहुत बड़ी समस्या थी कि इतने महत्त्वाकांक्षी पाठ्यक्रम के लिए अध्यापक उपलब्ध नहीं थे। भारतीय भाषाओं के अध्यापकों की नियुक्ति तो भारत से ही की गई। कॉलेज के आरंभिक दिनों में पाठ्यक्रम की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों का भी अभाव था। अंग्रेज़ विद्यार्थियों के लिए भारत की स्थानीय भाषाओं का अध्ययन सर्वथा नवीन प्रयोग था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए स्थानीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों को तैयार करके प्रकाशित करवाया गया। आरंभिक दस वर्षों में ही बहुत-सी पुस्तकों का लेखन, संपादन एवं अनुवाद प्रकाशित किया गया। तैयार पुस्तकों की प्रतियाँ बंबई व इंग्लैंड स्थित कॉलेजों को भी भेजी गईं। पराजित हुए टीपू सुल्तान के पुस्तकालय की भी अनेक पुस्तकें लॉर्ड वेलेजली द्वारा फोर्ट विलियम कॉलेज के पुस्तकालय को दे दी गईं।

पुस्तक लेखन में सर्वाधिक योगदान जॉन गिल्क्राइस्ट का रहा। वे कॉलेज के प्रथम अध्यक्ष होने के साथ-साथ हिंदी एवं उर्दू के प्रोफेसर भी थे। उनके द्वारा लिखित पुस्तकों की सूची में निम्नलिखित नाम महत्त्वपूर्ण हैं-

1. ए डिक्शनरी, इंगलिश एंड हिंदुस्तानी
2. एपेंडिक्स टु द डिक्शनरी, द ओरिएंटल लिविंग्स
3. द हिंदी अरेबिक टेबल
4. कम्पेरेटिव एल्फाबेट- रोमन, नागरी एंड पर्सियन
5. द हिंदी डाइरेक्टरी फॉर स्टूडेंट्स इंट्रोडक्टर टु द हिंदुस्तानी लेंगवेज़

गिल्क्राइस्ट के अतिरिक्त प्रोफेसर विलियम कैरी ने बांग्ला भाषा और कैप्टन टॉमस रोबक ने उर्दू भाषा के लिए पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। हिंदी की पाठ्य पुस्तकों के निर्माण में भारतीय विद्वानों का योगदान प्रशंसनीय रहा। लल्लूलाल ने सिंहासन बत्तीसी, शकुंतला और प्रेमसागर की रचना की। सदल मिश्र की रचनाओं में नासिकेतोपाख्यान का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

इस प्रकार जॉन गिल्क्राइस्ट ने खड़ी बोली गद्य के विकास में (अनेक पुस्तकों को लिखवाकर-छपवाकर) महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यद्यपि वे हिंदी (जिसे वे हिंदवी कहते थे) के पक्षधर न होकर उर्दू के हिमायती थे। उनके अनुसार हिंदुओं में प्रचलित हिंदवी एक गँवारू भाषा है। वे उस हिंदुस्तानी भाषा के पक्षधर थे जो अरबी-फारसी से भरी हो। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस विषय पर रोशनी डालते हुए लिखा है, "उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में वास्तविक रूप में हिंदी गद्य का सूत्रपात हुआ। ....परंतु खड़ी बोली में लिखा जाने वाला गद्य ही अंत तक साहित्य का महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली वाहन बना। इन्हीं दिनों अंग्रेजों के प्रयत्न से कलकत्ते में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई और अंग्रेज़ अफसरों ने गंभीरतापूर्वक इस देश की भाषाओं के अध्ययन का प्रयत्न किया। इस कॉलेज के हिंदी-उर्दू अध्यापक सर जॉन गिल्क्राइस्ट ने हिंदी और उर्दू में पुस्तकें लिखने का प्रयत्न किया। इन्होंने कई मुंशियों की नियुक्ति की। सर जॉन गिल्क्राइस्ट प्रधान रूप से हिंदुस्तानी या उर्दू के पक्षपाती थे परंतु वे जानते थे कि उस भाषा की आधारभूत भाषा हिंदवी या हिंदुई थी। इसी आधारभूत भाषा की जानकारी के लिए उन्होंने कुछ भाषा मुंशियों की सहायता प्राप्त की।"[10] आगे द्विवेदी जी इन भाषा मुंशियों का परिचय देते हैं और हिंदी गद्य साहित्य में उनके द्वारा किए गए योगदान पर विचार करते हैं। वे लिखते हैं, "भाषा मुंशियों में श्री लल्लूलाल जी और सदल मिश्र नामक दो पंडितों ने हिंदी गद्य में पुस्तकें लिखीं। एक और भाषा मुंशी श्री गंगाप्रसाद शुक्ल थे जिनकी किसी रचना का पता नहीं चलता। कॉलेज की कार्यवाहियों में इनकी सहायता से बने एक कोश 'हिंदी-इंग्लिश डिक्शनरी' का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार लल्लूलाल जी और सदल मिश्र ने हिंदी गद्य में पुस्तकें लिखीं।"[11]

लॉर्ड वेलेजली का यह सपना फोर्ट विलियम कॉलेज 1800 ई. में पूरा हुआ। लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने इसकी स्थापना और योगदान पर विचार करते हुए लिखा है कि, "1800 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की और अन्य अनेक विषयों के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था की। भारतीय इतिहास में आधुनिकता के निश्चित प्रतीक के रूप में सर विलियम जोन्स द्वारा स्थापित एशियाटिक सोसाइटी (1784) के बाद कॉलेज का महत्त्व तो है ही, साथ ही आधुनिक भारतीय भाषाओं में से प्रधानतः हिंदी, बांग्ला और उर्दू साहित्य के इतिहास में भी उसका घनिष्ठ संबंध है। कॉलेज में व्याकरण, कोश, विरामचिह्न, हिंदी में अरबी-फारसी ध्वनियाँ प्रकट करने वाले तथा साधारण टाइप ढालने आदि के संबंध में काफी काम हुआ।"[12]

फोर्ट विलियम कॉलेज का भाषा व साहित्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा। एक तो कॉलेज में मौलिक रचनाओं व अनुवादों के माध्यम से अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। दूसरे कॉलेज में वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के माध्यम से तत्कालीन भारतीय समाज में विद्यमान कुरीतियों पर चर्चा हुई। जिसका सुफल यह हुआ कि एक नई चेतना का प्रसार बढ़ा। कॉलेज में समय-समय पर सती-प्रथा, जाती-व्यवस्था, विधवा-जीवन जैसे ज्वलंत विषयों पर वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता रहा। तीसरे, पहली बार आधुनिक प्रणाली से शब्दकोश प्रकाशित करने का श्रेय भी फोर्ट विलियम कॉलेज को जाता है। खड़ी बोली हिंदी गद्य का प्रारंभ भी फोर्ट विलियम कॉलेज से माना जा सकता है। हालांकि कॉलेज की स्थापना से पहले भी छुटपुट गद्य रचनाएँ मिलती हैं लेकिन व्यवस्थित खड़ी बोली गद्य तो हमें कॉलेज के माध्यम से ही प्राप्त होता है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कई न्यूनताओं के बाद भी फोर्ट विलियम कॉलेज का योगदान हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में अविस्मरणीय रहेगा।

संदर्भ

1. फोर्ट विलियम कॉलेज, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी प्रकाशन, इलाहाबाद, संवत 2004 वि., पृष्ठ 4
2. भारत की भाषा समस्या, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तीसरा संस्करण 1989, पृष्ठ 88
3. वही, पृष्ठ 88
4. फोर्ट विलियम कॉलेज, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी प्रकाशन, इलाहाबाद, संवत 2004 वि., पृष्ठ 1
5. वही, पृष्ठ 1
6. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, ए. आर. देसाई, मैकमिलन प्रकाशन इंडिया लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम हिंदी संस्करण 1976, पृष्ठ 112-113
7. वही, पृष्ठ 113
8. फोर्ट विलियम कॉलेज: एक इतिहास, नीरज गोयल ऋषभचरण जैन एवं संतति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृष्ठ 34-35
9. वही, पृष्ठ 40-41
10. हिंदी साहित्य- उद्भव और विकास, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 1987, पृष्ठ 212
11. वही, पृष्ठ 214
12. फोर्ट विलियम कॉलेज, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी प्रकाशन, इलाहाबाद, संवत 2004 वि., पृष्ठ 4

LBP PUBLICATION